[Chapter - 9, Credit Creation by Banks]

साख की विशेषताओं

भुगतान क्षमता
1 विश्वास
2 पूंजी व संपत्ति
3 साख की अवधि
4 आर्थिक चरित्र
5 प्रतिभूतियो की तरलता
6

व्युत्पन्न जमाओं द्वारा साख निर्माण

साख सृजन की प्रक्रिया (बहुल साख सृजन) →

	Deposit	Reserve Ratio (20%)	Credit Creation / व्युत्पन्न जमा
Primary	1000	200	800 (1000-200)
Secondary	800	160	640 (800-160)
Secondary	640	128	512 (640-128)
Secondary	512	102	410 (512-102)
	—	—	—
	—	—	—
Total	5000	1000	4000

(1) नोट निर्गमन द्वारा साख सृजन (Creation of Credit by Issue of Notes) → किसी बैंक की प्रारंभिक जमा के आधार पर देश मे कुल जमाओ, कुल साख निर्माण क्षमता व कुल व्युत्पन्न जमाओ की राशि की गणना होती है →

$$\text{Total Deposit} = \frac{A}{R}$$

Total De. $= \frac{1000}{20\%} = 5000$

A → Primary Deposit
R → Reserve Ratio

Date
Page

Credit Creation = Total Deposit − Primary Deposit
= 5000 − 1000
Credit Cr. = 4000

→ यदि साख निर्माण क्षमता की सही-2 गणना करनी हो तो निम्न 3 कोषों पर भी ध्यान देते है।

(i) बैंक द्वारा Central Bank मे रखे जाने वाले वैधानिक कोषानुपात (Statutory Reserve Ratio) जिसे Reserve Ration भी कहते है।

(ii) बैंक द्वारा अपने पास रखेन जाने वाले नकद तरल कोषानुपात (Liquidity Cash Ratio)

(iii) बैंक के पास जमाओ का अप्रयुक्त भाग (Unutilised Ratio of deposit)

~~इन form~~ तीनो के समावेश से Total deposits व Credit Creation की गणना का Change formula होगा →

$$\text{Total deposit} = \frac{A}{R+L+U}$$

A = Primary deposit
R = Statutory deposit in Central Bank
L = Liquidity Cash Reserve
U = Unutilised Ratio of deposit

Derivative Derived loan (व्युत्पन्न)

Exa → Deposit	Amt	CRR (10%)	Loan / Credit Creation
Primary	1000	100	900
Secondary	900	90	810
S.	810	81	729
S.	729	73	656

∴ $\text{Primary deposit} \times \frac{1}{CRR}$

$$1000 \times \frac{1}{10\% (0.1)} = 10,000$$

Deposit	CRR	Credit Creation
10000	10%	100,000
10000	5%	200,000
10000	20%	50,000

बैंको द्वारा साख निर्माण / साख निर्माण की विधियाँ

(1) नोट निर्गमन द्वारा साख सृजन

(2) नकद जमा व साख जमा द्वारा साख सृजन →

→ (a) नकद जमा या प्रारंभिक जमा

(b) साख जमा या व्युत्पन्न जमा

साख निर्माण को प्रभावित करने वाले तत्व / साख निर्माण की सीमायें

1. देश मे विधिग्राह्य मुद्रा की मात्रा
2. बैंकिंग आदत
3. बैंकिंग सुविधाएं व विकास
4. मौद्रिक व्यवस्था
5. आर्थिक विकास की व्यवस्था
6. सरकारी नीति

व्यापारिक दशाएँ
7 राजनैतिक दशाएँ
8 प्राथमिक जमाओ की मात्रा
9 कुल दायित्व मे नकद कोष का प्रतिशत
10 केन्द्रीय बैंक की नीति
11 प्रतिभूतियो का स्वरूप
12 सट्टे का जोर व मनोवैज्ञानिक प्रवृतियाँ
13 अंतर्राष्ट्रीय ऋणो की मात्रा
14 बचत की प्रवृति
15

Chapter-1, बैंको के सिद्धांत, संगठन व प्रकार

व्यापारिक बैंको के मूलभूत सिद्धांत

(1) तरलता का सिद्धांत →

व्यावसायिक संगठन के रूप मे बैंकिंग संस्थाओ का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना होता है (main objective - Profit earn)

अतः उन्हे अपने financial fund को Invest करना होता है किंतु इनके पास स्वयं के साधन बहुत सीमित होते है तो इसलिए बैंक जनता से Deposits Accept करती है जो मांगने पर या एक निश्चित अवधि (Time Period) के बाद लौटाये जाते हैं। अत: इससे बैंक कोषो की तरलता को बनाये रखते है।

इसमे बैंक के पास भविष्य मे जनता की मुद्राओ को लौटाने के संबंध मे अनेक Contract होते है।

बैंको का main कार्य जनता के Cash को Bank deposit मे change करना व जनता के मांगने पर Bank deposit से Cash मे change करना होता है और ये सब बैंक Liquidity के रूप मे करती है अत: कह सकते है कि

"जमा के बदले नकद मुद्रा देने की क्षमता को ही बैंकों की तरलता की संज्ञा दी जाती है।

साधनों की तरलता से अभिप्राय, बैंकों की उस क्षमता से है जिसके अंतर्गत जमाओं को पुनः माँगने पर Cash से तुरंत Payment हो सके।
सबसे अधिक तरल कौन, बैंकों द्वारा स्वयं की पास रखी गई Cash Amount या देश के Central Bank के पास बैंकिंग Act के तहत जमा कराई गई राशि से होता है जिसे Cash Reserve कहते हैं।
इस Cash Reserve को सुरक्षा की प्रथम पंक्ति (First line of defence) भी कहते हैं।

"बैंकिंग संस्थाओं की तरलता के संबंध में नकद-कोषों का विशेष महत्व होता है।
इसी प्रकार सरकारी प्रतिभूतियों को मुद्रा बाजार में बेचकर नकद कोषों के रूप में परिवर्तित करते हैं।
तरल परिसंपत्तियाँ, नकद कोषों के समान तो तरल नहीं होतीं, किन्तु उन्हें आसानी से Cash में Change कर सकते हैं पर बैंक को हानि नहीं होनी चाहिए।
अतः नकद कोषों के अलावा, Discounted Bills, अल्पकालीन सरकारी प्रतिभूतियाँ, अतः याचना राशि व अल्पकालीन ऋण ही सर्वाधिक तरल विनियोग होते हैं।

② लाभदायकता का सिद्धांत :-
बैंकिंग संस्थाएँ व्यावसायिक उद्देश्य से संगठित की जाती हैं अतः उन्हें संचालन संबंधी खर्चों को वहन करना होता है संगृहीत वित्तीय कोषों पर Public को Interest भी देना होता है Shareholders को dividend भी Pay करना होता है, साथ ही Reserve

किन्तु ही बनते होते है तो उपरोक्त ये सब कार्यों के साथ-साथ बैंक को लाभ अर्जन की क्षमता का भी ध्यान रखना होता है।
लाभार्जन की इच्छा मे बैंकिंग संस्थाओ को तरलता का त्याग नही करना चाहिए।

अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु → (1) long term Investment कर सकते है और ऐसे विनियोग Govt. Securities & Industrial Securities मे कर सकते है।

(2) बैंकिंग संस्थाओ द्वारा loan & Advance भी दिये जा सकते है। loan (Short term & long term) हो सकते है।

"अतः एक सफल बैंकर को तरलता व लाभदायकता जैसे विपरीत तत्वो के मध्य उचित संतुलन बैठाना चाहिए। 5

(3) सुरक्षा का सिद्धांत →
बैंकिंग संस्थाओ को तरलता व लाभदायकता के अलावा भी आर्थिक साधनों की सुरक्षा के सिद्धांत का पालन करना होता है। क्योंकि बैंको के पास स्वयं के साधन व कोष बहुत सीमित होते है और ये Public की Savings को Deposits के रूप मे Store/करके Collect करके उन्ही मे व्यवसाय करती है। ये अनावश्यक जोखिमो को वहन नही कर सकती। यदि कोषों के विनियोग के संबंध मे सुरक्षा के सिद्धांत की अवहेलना हो तो बैंक को संकट की स्थिति झेलनी होगी।

इसलिए बैंको को अपने अधिकांश कोषो का विनियोजन किसी एक प्रकार के व्यवसाय या क्षेत्र विशेष या व्यक्ति विशेष को नही करना चाहिए। in other words जोखिम की मात्रा को विभाजित करने के उद्देश्य से विनियोगों मे विविधता का तत्व होना जरूरी है।
वित्तीय मदद से पूर्व बैंक को ऋणी व्यक्ति, संस्था की आर्थिक (economical situation) स्थिति Character, Goodwill (साख, प्रतिष्ठा) देख लेनी चाहिए। इसके अलावा ऋणों के लिए गिरवी रखी वस्तुओं का मूल्यांकन भी सही करना चाहिए, अर्थात् गिरवी रखी वस्तु का बाजार मूल्य ऋण राशि से अधिक होना जरूरी है। परंतु अब "परियोजन की लाभार्जन क्षमता का सिद्धांत" प्रतिस्थापित है।
~~अतः~~

5/11/20

बैंको की तरलता के संबंध मे ~~विचा~~ आधुनिक विचारधारा

1. वास्तविक बिल सिद्धांत या स्व-तरलता सिद्धांत
2. हस्तांतरण का सिद्धांत
3. प्रत्याशित आय का सिद्धांत / तरलता का सम्भावित आय सिद्धांत

1. वास्तविक बिल सिद्धांत →
परंपरागत विचारधारा के अनुसार, "व्यापारिक बैंको को केवल अल्पकाल व उत्पादक कार्यों के लिए ही ऋण देने चाहिए, ताकि उनकी अदायगी मे कोई कठिनाई न आये।"
स्व-तरलता सिद्धांत की मान्यता ये है कि बैंको को स्व-तरल विपत्रों की जमानत पर ही ऋण प्रदान करने

चाहिए। अतः इसे "वास्तविक बिल सिद्धांत" की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि बिल ~~स्व~~-तरल होते है।

→ आधुनिक अर्थशास्त्रियों द्वारा इस सिद्धांत की कटु आलोचना की गई, जो इस प्रकार →

(1.) व्यापारिक बैंको द्वारा केवल व्यापारिक बिलो के आधार पर ऋण देने पर नवीन ऋण केवल उसी परिस्थिति मे दिये जा सकते है जब पुराने ऋणो का भुगतान कर दिया गया हो। इससे उत्पादन व व्यापार को विशेष हानि होगी।

मुद्रा संकुचन की स्थिति उत्पन्न होने से मूल्यो मे कमी आती है पुराने ऋणियों के भुगतान के संबंध में विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ता है। 6

(2.) इस सिद्धांत मे केवल स्वतरल विपत्रो के आधार पर परिसंपतियों मे तरलता बनी रहने की बात कही गई है जो कि सही प्रतीत नही होती क्योंकि यदि कुछ वस्तुऐं ऐसी हैं जिनके संबंध मे स्वतरल विनिमय विपत्र लिखे गये है यदि उनके मूल्यों मे गिरावट आ जाती है तो ऐसी स्थिति मे तरलता लगभग समाप्त हो जाती है। इससे ये स्पष्ट है कि बैंकिंग संस्थाओं की परिसंपतियो की तरलता ऋणों की परिपक्वता पर आधारित नही रहती है।

(2.) <u>हस्तांतरण का सिद्धांत</u> →

कोई भी बैंक उस समय तक तरल स्थिति मे रहेगा जब तक उसके पास ऐसी संपति रहे जिसको वो सुगमता से बेच सके। इसी को हस्तांतरण का सिद्धांत कहते है।

(3.) प्रत्याशित आय का सिद्धांत →
बैंको मे अब नवीन सिद्धांत अपनाया गया जिसे "तरलता का संभावित आय सिद्धांत" कहते है। इसका जन्म सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे हुआ जहाँ औद्योगिक व व्यावसायिक दीर्घकालीन पूँजी संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यापारिक बैंकिंग संस्थाओं द्वारा मध्यमकालीन ऋण प्रदान किये जाते है। इन ऋणों को सावधि ऋण भी कहते है जिनकी अवधि एक वर्ष से लगाकर 5 वर्ष तक की होती है।

6/11/20

व्यापारिक बैंको का संगठन

(1.) शाखा बैंकिंग पद्धति
(2) इकाई बैंकिंग पद्धति
(3) श्रृंखला बैंकिंग पद्धति
(4) अनुरूप बैंकिंग
(5) मिश्रित बैंकिंग पद्धति

(1.) शाखा बैंकिंग पद्धति

शाखा बैंकिंग वो प्रणाली है जिसके अंतर्गत बैंकों की अनेक शाखाएं देश भर मे फैली रहती है। ये शाखाएं एक ही संचालक मंडल के प्रबंध के अंतर्गत कार्य करती है। इनका एक मुख्यालय होता है जहाँ से प्रबंधक संचालक अपनी समस्त शाखाओं को निर्देश देते है।

* शाखा बैंकिंग प्रणाली के लाभ →
1 श्रम विभाजन
2 जोखिम मे कमी
3 धन के हस्तांतरण मे सुविधा
4 बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार

5. नकद कोष की बचत
6. प्रशिक्षण
7. ब्याज - दर

* शाखा बैंकिंग प्रणाली के दोष →

1. नियंत्रण मे कठिनाई
2. अस्वस्थ प्रतियोगिता
3. श्रम - विभाजन के दोष
4. श्रम - संघो को बढ़ावा
5. कर्मचारी की मनमानी को बढ़ावा
6. पहल - शक्ति का अभाव
7. खर्चीली पद्धति
8. दुर्बल शाखायें
9. स्थानीय कोषों का बड़े स्थान पर प्रयोग

(2) इकाई बैंकिंग

इकाई बैंकिंग पद्धति की स्थापना 'USA' मे हुई। ये एक ही कार्यालय तक सीमित होता है। उन्हे विशेष परिस्थितियों मे ही सीमित क्षेत्र मे बैंक शाखायें खोलने का अधिकार प्राप्त होता है। इस प्रणाली मे बैंको की स्थापना होने पर देश मे बैंको की संख्या बहुत अधिक हो जाती है। इन बैंकों के पास अपने स्वयं के संचालक व हिस्सेदारी होते हैं।

* इकाई बैंकिंग प्रणाली के गुण →

1. प्रबंध व निरीक्षण में सुविधा
2. स्थानीय हितो की सुरक्षा / स्थानीय बैंकिंग
3. क्षेत्रीय / स्थानीय विकास
4. आर्थिक शक्ति का विकेन्द्रीयकरण
5. स्वतंत्र व्यवसाय सिद्धांत के अनुरूप
6. व्यक्तिगत प्रेरणा
7. दुर्बल बैंको का अंत
8. तीव्र निर्णय
9. एकाधिकारवादी प्रवृत्तियां नहीं
10. लाल फीताशाही नही
11. अप्रभावी शाखायें नहीं
12. बडे पैमाने पर संचालन की कोई विषमता नहीं

Date ______
Page ______

(12) बैंकिंग व्यवसाय मे पहल (13) संचालन मे लचीलापन

(2) एकाई बैंकिंग प्रणाली के दोष →

* श्रम - विभाजन व विशिष्टीकरण संभव नही

1 जोखिम का बँटवारा नही

2 बैंकिंग सेवाओं का प्रसार नही

3 बैंकिंग सुविधाओ का सीमित विस्तार

4 बड़े पैमाने के उत्पादन के लाभों से वंचित

5 विशेषज्ञों का अभाव (12) केवल शहरी व बड़े क्षेत्रों में

6 नकद कोषों की अधिक मात्रा संचालन

7 धन हस्तांतरण मे कठिनाई (13) कोषों / निधियो का महँगा प्रबंधन

8 ब्याज दरों मे असमानता (14) अवांछनीय प्रतिस्पर्धा

9 सरकारी नियंत्रण मे असुविधा (15) स्थानीय दबाव

10 जोखिम का सामना करने मे अयोग्य

11

(3) शृंखला बैंकिंग

इस प्रणाली के अंतर्गत एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का दो या दो से अधिक बैंकों पर नियंत्रण होता है। इस प्रणाली के अंतर्गत प्रत्येक बैंक अलग-2 होने के बावजूद एक स्वामित्व के अधीन होने के कारण इनमे आपसी संबंध स्थापित हो जाता है इस कारण इसे "शृंखला बैंकिंग" कहते है।

* गुण →

1. साधनो का उचित उपयोग

2 आय मे वृद्धि

3 कार्य प्रणाली कम -खर्चीली

4 परिवर्तन संभव

5 नियंत्रण अधिक कुशल

6 जोखिम कम

ता नही

Date____
Page____

* दोष →
1. प्रबंध अकुशल
2. नियमो के उल्लंघन की सम्भावना

(4) अनुरूप बैंकिंग

इस प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के बैंक एक दूसरे के अनुरूप संबंध स्थापित करके कार्य का सफलतापूर्वक संचालन करते है। इनमें किसी एक बड़े बैंक के पास विभिन्न बैंक अपना खाता खोलकर एक-दूसरे से लेनदेन करते है। इसमे छोटी बैंक एक बड़ी बैंक खाता खोलकर कार्य करती है।

* गुण →
1. धन का संग्रह व शीघ्र हस्तांतरण
2. आर्थिक सहायता
3. प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय
4. कोषों का सर्वोत्तम उपयोग
5. स्वतंत्रता

* दोषों →
1. बड़े बैंको का प्रभुत्व
2. साधनो की समस्या
3. अत्याधिक अग्रिम

(5) मिश्रित बैंकिंग प्रणाली

ये इस सिद्धांत पर आधारित है कि बड़े उद्योगों का कार्यशील पूंजी हेतु अल्पकालीन ऋण, स्थायी पूंजी हेतु मध्यमकालीन व स्थायी पूंजी हेतु दीर्घकालीन ऋण प्रदान करें।

ये बैंक निम्न सिद्धांत पर आधारित है→

1. निष्क्रिय कोषों को दीर्घकालीन ऋणों को देने मे प्रयोग

2. बैंको के लाभ मे वृद्धि।

Chapter - 10. Unit - III

~~प्लास्टिक मुद्रा~~ खुदरा बैंकिंग

~~Plastic money~~ Retail Banking

Date 3/12/20
Page

~~प्लास्टिक मुद्रा अमेरिका से आरंभ हुआ था~~

फुटकर बैंकिंग

स्वतंत्रता के बाद तेजी से आर्थिक विकास के साथ-साथ आय बढ़ने व गरीबी हटाने हेतु बैंकों को एक परिवर्तनक एजेन्ट की भूमिका दी गई। अब बैंक समाज के कमजोर वर्ग जैसे- दस्तकार, छोटे किसान, मजदूर, अपंग, हथकरघा - कर्ता, मोची, कुम्हार आदि को भी ऋण देने लगे हैं।

फुटकर बैंकिंग के प्रमुख कार्यक्रम

बैंक शाखाओं में वृद्धि

1 जन बैंकिंग व्यवस्था - बैंक जमा व बैंक ऋण

2 अग्रणी बैंक योजना

3 सेवा क्षेत्र विचारधारा

4 विभेदक ब्याज दर योजना

5 प्राथमिक क्षेत्र को उधार →

6 कृषि

a लघु उद्योग लघु व्यवसायी

b छोटे सड़क व जल परिवहन चालक

c खुदरा व्यापारी

d व्यवसायी व स्वनियोजित व्यक्ति

e अनुसूचित जाति - जनजाति हेतु राज्य द्वारा प्रायोजित संस्था

f शिक्षा, आवास

g स्वयं सेवी संगठन - NGOs को दिए गए ऋण

h

× ———— ×

Chapter - 24
Plastic money

प्लास्टिक मुद्रा अर्थात डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड

क्रेडिट कार्ड - विकास यात्रा (Progress)

इसका प्रचलन सर्वप्रथम अमेरिका मे हुआ। भारत में क्रेडिट कार्ड का प्रारंभ 1990 के आस - पास मे हुआ। रंगराजन समिति ने 1989 मे प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट मे सुझाव दिया कि बैंको को अब क्रेडिट कार्ड के व्यवस्था को प्रोत्साहित करना चाहिए।

कार्यप्रणाली (Working Procedure)

क्रेडिट कार्ड के 3 पक्षकार होते है -

1. कार्ड जारी करने वाला बैंक
2. कार्डधारक
3. सदस्य - व्यावसायिक प्रतिष्ठान

भारत मे क्रेडिट कार्ड जारी करने वाले बैंको मे भारतीय स्टेट बैंक, केनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, आंध्रा बैंक जैसे भारतीय बैंक व सिटी बैंक, हांगकांग बैंक, ए.एन. ए. ग्रिन्डलेज बैंक जैसे विदेशी बैंक प्रमुख है।

इस कार्ड हेतु आवेदक व्यक्ति की आय निर्धारित न्यूनतम राशी से अधिक होनी चाहिए। ये राशी 50,000 रु. से 1 लाख के बीच मे निर्धारित की जाती है।

क्रेडिट कार्ड धारक को बैंक द्वारा एक प्लास्टिक कार्ड जारी किया जाता है जिस पर जारीकर्ता बैंक का नाम, कार्ड संख्या, कार्डधारक नाम व उसके हस्ताक्षर होते है।

* क्रेडिट कार्डधारको को लाभ -

1. अधिकतम सीमा तक क्रय (बिना नकद / चैक)
2. ब्याज रहित साख सुविधा (15 से 51 दिन)
3. बैंक शाखा या ATM से निर्धारित साख सीमा में नकद

राशी भी प्राप्त की जा सकती है।

* हानि →

1. खर्च ज्यादा
2. कार्ड गुम होने से धोखाधड़ी
3. फोटो कॉपीड कार्ड का प्रयोग

Debit Card

कुछ ग्राहक Credit Card की सुविधा का दुरुपयोग सीमा से अधिक खर्च करते है। इससे बचाव हेतु ग्राहको को Debit Card की सुविधा दी जाती है। बैंक के ग्राहको के खातों से डेबिट कार्ड की राशि उनके उपलब्ध जमा राशी शेष की सीमा तक सीधे Dr. हो जाती है।

* विशेषता →

1. ये पासबुक आहरन की तरह कार्य करता है। बैंक को जमा राशि की हानि नही होती।
2. ये भुगतान की पेपर पद्धति नही है।
3. धोखाधड़ी की संभावना नहीं।
4. ग्राहको को लेने-देन लागत नही उठानी होती।
5. विलंब शुल्क व ब्याज का भुगतान नही करना पड़ता।
6. जोखिम कम
7.

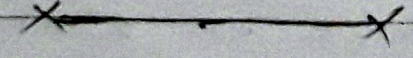

×————×

Chapter-14

Indian Banking System III - Innovative

भारतीय बैंकिंग प्रणाली (III) - नवोन्मेष प्रवृतियाँ

16/11/19

भारतीय बैंकिंग - विकासमान प्रवृतियाँ

Indian Banking → Development Trends

नवीनतम तकनीकी परिवर्तन

1. इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग
2. कहीं भी बैंकिंग
3. वर्चुअल बैंकिंग
4. ग्राहक सेवा
5. इलेक्ट्रॉनिक गतिविधियाँ
6. चैक, ड्राफ्ट, कालातिरोहित
7. क्रेडिट कार्ड
8. डेबिट कार्ड
9. स्मार्ट कार्ड
10. मूल्य संवर्धित सेवाएँ - नवोन्मेषी सेवाएँ
11. खिड़की सेवा
12. आगामी दशक मे नवोन्मेषी परिवर्तन

→ Service full form →

S = Speed
E = Encouragement
R = Respect
V = Value
I = Integrity
C = Communication
E = Evaluation

→ Counter →

C = Courtesy
O = Organize
U = Understand
N = Nerves

T = Tolerate
E = Enquiry
R = Respect